साठोत्तरी हिन्दी कहानियों में नारी

डॉ. ललिता मीणा,

असिसटेंट प्रोफेसर,
माता सुन्दरी कॉलेज,
दिल्ली विश्वविद्यालय

सार

समाज में स्त्रियों को हाशिए में ही रखा गया है। वह पुरूषों के निर्णय के अधीन ही नजर आती है व अपने अपने हिस्से की पीड़ा सहती है। उत्तर मध्यकाल में भी नारी के शारीरिक सौंदर्य को महत्व दिया। उसकी इच्छा एवं भावनाओं से किसी को कोई सरोकार नही था। स्वतंत्रता के पश्चात देश को आर्थिक मंदी का सामना करना पड़ा। जिसके परिणाम स्वरूप स्त्री को भी पुरूष के साथ रोजगार के लिए घर से बाहर जाना पड़ा। जिसे भारतीय समाज ने कभी सहमति नही दी। स्त्री का घर के बाहर अपनी पहचान बनाना स्त्री के पारंपरिक स्वरूप में बदलाव का आभास कराता है। साठोत्तर कहानियों में स्त्री–पुरूषों के बदलते संबंधों को ज्यादा उजागर किया है। नारी का पढा लिखा होने के बावजूद वह जीवन में संतोष प्राप्त नही कर पा रही। उसके जीवन का कोई न कोई कोना खाली सा रह जाता है अपने संस्कारों के कारण तो कभी अतिआधुनिक होने के कारण वह अकेलेपन, द्वन्द्व, दोहरे जीवन, घुटन जैसी समस्याओं से घिरी दिखाई देती है।

शब्द संकेत – *आत्मबल, मध्यकालीन समाज, विद्रोह, सरोकार, समाज सुधारक, मार्ग प्रशस्त, स्वछंद, स्पर्धामय, भोगवादी, निष्ठावान, द्वंद, तनाव, निर्द्वंद, संस्कार और मर्यादा, अस्तित्व, अलगाव, दबंगई, मातृत्व, पारदर्शिता, आधुनिकता, वैज्ञानिकता, संयुक्त परिवार*

प्रस्तावना

कहानी एक साहित्यिक विधा है। इस विधा में समाज के बदलाव की झलक तुरन्त नजर आती है। कहानी वह झरोखा है जिससे हम समाज रूपी आकाश में छाई घटा को देखकर मौसम का अंदाजा लगा सकते हैं। आजादी के बाद समाज की बदलती परिस्थितियों के अनुरूप नारी की बदलती छवि छोटी सी कहानी में सहज रूप से देखने को मिलता है। नारी परिवार की धूरी होती है। परिवार से समाज बनता है। समाज के प्रत्येक क्षेत्र एवं वर्ग में नारी पुरूषों के बराबर महत्व रखती है।

सदियों से नारी को घर की इज्जत समझा जाता रहा है। इसी इज्जत को सुरक्षित रखने हेंतु नारी को समाज के बाह्य वातावरण से बचा कर रखा जाता है। वह स्वयं कोई निर्णय नहीं ले सकती। उसके हर कार्य के पीछे उसके घर के पुरूष (वह पुरूष पिता, भाई, पति या कोई भी हो सकता है) की सहमति होती है। आज़ादी की लड़ाई में समाज का प्रत्येक वर्ग शामिल था। क्योंकि यह लड़ाई अकेले ब्रिटिश सत्ता के खिलाफ न होकर प्रत्येक वर्ग की अपनी पीड़ा से मुक्ति की लड़ाई थी।

आजादी के बाद देश के प्रत्येक क्षेत्र में एक क्रान्ति सी आयी। शिक्षा, विज्ञान, व्यवसाय, कृषि, परिवार आदि में बदलाव या विकास हुआ है। जिसका प्रभाव प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से समाज के प्रत्येक वर्ग पर पड़ता है जोकि कहानीकारो की पैनी नजर से बच नहीं पाया।

समाज की बारिक से बारिक प्रतिक्रिया कहानी में दर्ज होती चली गई।

स्त्री नौकरी पेशा होने के बावजूद अपने पति के अनुसार ही निर्णय लेने के लिए मजबूर हो जाती है। मृदुला गर्ग की 'मेरा' कहानी में कामकाजी महिला और पुरूष के सन्तानोत्पति की समस्या को उजागर किया है जिसमें नायक अपनी महत्वकांक्षाओं की पूर्ति हेतु अभी संतान नहीं चाहता, किन्तु उसकी पत्नी गर्मवती हो जाती है। नायक भ्रूण हत्या करवाना चाहता है और पत्नी पर दबाव भी डालता है उसकी माँ भी उसे गर्भपात करवाने की सलाह देती है। पत्नी, पति की मजबूरी के दवाब में अस्पताल तो पहुँच जाती है किन्तु फिर उसे महसूस होता है कि बच्चे को जन्म देना या ना देना यह उसका स्वयं का निर्णय होना चाहिए, जबकि 'खाली' कहानी में कामकाजी महिला मां ही नहीं बनना चाहती। क्योंकि वह उन सभी समस्याओं से दूर रहना चाहती है, जो बच्चे के होने पर होती है।

स्त्री जब घर से बाहर जाकर नौकरी करती है तो उसे घर की वे सभी जिम्मेदारियां तो निभानी ही होती हैं, जो उसे सामाजिक परंपरा से उपहार के रूप में मिली है, साथ ही घर के बाहर भी वह अपना आस्तीत्व तलाशती है। इसी तलाश में घर में काफी कुछ टकराता है, जोकि हमें समाज के हर वर्ग में दिखाई देने लगा है। साठोत्तरी कहानी में विवाह के उपरान्त नारी में पतिइतर संबंध बनाने में किसी प्रकार का संकोच भाव नजर नहीं आता। नारी का स्वछंद स्पर्धामय, भोगवादी रूप सामने आया है।

भारतीय पत्नी का जीवन पति से जुड़ा हुआ है। वह अंत तक पति के सभी आदेशों को मानती है। उसके सभी अत्याचारों को सहन करती है। उसे ईश्वर के बाद दूसरे स्थान पर स्वीकार करती है। मंजुल भगत की 'नालायक बहु' कहानी में कामिनी निष्ठावान पत्नी के रूप में दिखाइ देती है। पति के बेरोजगार होने पर वह स्वयं नौकरी करती है। सास एवं पति के ताने सहती है किन्तु अति होने पर वह सास को यह बताने से नहीं चूकती की पति एक होने के कारण उसकी सभी कमियों के साथ जीने का प्रयास कर रही है। 'चक्करघिन्नी' कहानी की विनीता एक आदर्श पत्नी और आदर्श मां बनने का स्वप्न लेकर डॉक्टर न बनकर शादी करके एक घरेलू महिला का जीवन जीती है। मां बनने का स्वप्न भी पूरा करती है। घर के सभी सदस्यों का ख्याल रखती है। खाना बनाती है। किन्तु पति और बच्चों की नजर में नौकरी पेशा होकर ही एक स्त्री आदर्श मां और आदर्श पत्नी हो सकती है। इसीलिए विनीता एक रिसेप्शनिस्ट की नौकरी करने लगती है। यह भारतीय नारी का परिवार में बदलते स्वरूप का आगाज है।[1]

राजी सेठ की 'अपने दायरे' कहानी के पति के लिए सिर्फ शरीर महत्व रखता है। उसके जीवन में भावनाओं के लिए कोई स्थान नहीं होता। किन्तु उसकी पत्नी भावुक प्रवृत्ति की होने के कारण टूटती जाती है और अपने पति से दूर होती जाती है।[2]

साठोतरी कहानियों में पति–पत्नी–प्रेमी और पति–पत्नी–प्रेमिका जैसे त्रिकोणीय संबंध नजर आते है जोकि मूल्यों को दूषित करते है। पति और पत्नी दोनों घर से बाहर कार्य करने लगे है। जिसके कारण स्त्री की कई बार दोहरी भूमिका हो जाती है। एक तो पत्नी के रूप में दूसरी प्रेमिका के रूप में। इसके कारण वैवाहिक जीवन में संघर्ष की स्थिति बनी रहती है। शशि प्रभा शास्त्री की 'एक त्रिकोण की तीन मछलियां' कहानी में सुमन अपने पति के अधूरे प्रेम के कारण तड़पती है क्योंकि उसका पति भौतिक रूप से उसके पास होता है। किन्तु मानसिक रूप से वह सरिता के पास रहता है। पति भी दोहरा जीवन जीने के कारण परेशान रहता है। मन्नू मंडारी की 'एक कमजोर लड़की की कहानी'[3] में रूप, ललित से विवाह के पूर्व से प्रेम करती हैं,

विवाह के बाद जब ललित उसे अपने साथ चलने के लिए कहता है तो वह तैयार तो हो जाती है किन्तु अपने पति का विश्वास तोड़ने की उसमें हिम्मत नहीं होती वह रूक जाती है।

नारी मन के द्वंद्व एवं तनाव को रवीन्द्र कालिया की 'नौ साल छोटी पत्नी' और शैलेश मटियानी की 'सीखचों पर अटका अतीत' आदि कहानियों में देखा जा सकती है। कहीं कहीं पर नारी पत्नी और प्रेमिका दोनों ही संबंधों को बड़े ही सहज भाव से निभाती है। दूधनाथ सिंह की 'शिनाख्त' महीप सिंह की 'काला बाप' गोरा बाप आदि काहानियों में नारी का निर्द्वन्द भाव देखने को मिलता है। शिनाख्त में पत्नी अपने विवाह पूर्व प्रेमी के साथ अपने ही घर पर शरीरिक संबंध रखती है और बिना डर के वह यह संबंध बनाती रहती है। उसे किसी प्रकार की ग्लानि नहीं होती। जब उसका तीसरा बच्चा होता है तो उससे प्रेमी द्वारा उस बच्चे के पिता के बारे में पूछता है तो वह निर्भय बिना अपराध बोध के जवाब भी देती है।

चूंकि नारी शिक्षा एवं रोजगार हेतु घर से बाहर कदम रखती है। बाह्म जगत में पुरूष वर्ग से संपर्क होना स्वभाविक है किन्तु वहीं पर विवाह पूर्व प्रेम जन्म भी लेता है। विवाह पूर्व प्रेम को समाज स्वीकार तो कर रहा है किन्तु स्त्री के संबंध में वह अभी भी संस्कारों और मर्यादा की दुहाई देता है। विवाह पूर्व प्रेम को विवाह की सहमति देने में संकोच करता है किन्तु यदि स्त्री पुरूष प्रेम विवाह कर भी लेते हैं, तो उनमें अस्तित्व को बनाए रखने का संघर्ष होता रहता है। जोकि घुटन के रूप में वैवाहिक जीवन में शामिल रहता है या फिर तलाक से पति पत्नी अलग अलग हो जाते है नारी दोनों ही परिस्थितियों में विभिन्न यातनाओं को सहन करती है जोकि साठोतरी कहानियों में बहुत ही मार्मिक एवं सहज रूप से दिखाया गया है।

ममता कलिया की 'पीली लड़की' कहानी की सोना प्रेम विवाह करती है। वह पढी–लिखी होने के साथ अध्यापिका भी है किन्तु विवाह के बाद पति पर उसका कोई जोर नहीं चलता। इनमें भी बहस होती है। दोनों साथ होकर भी एक साथ नहीं है।[4]

साठोतरी कहानियों में नारी के ईष्यालु स्वभाव को भी दिखाया है जब पति पत्नी एक दूसरे पर से विश्वास खत्म कर देते हैं या एक दूसरे से अधिक किसी अन्य को महत्व देते है तो ईर्ष्या का भाव पैदा होता हैं इस भाव के कारण मन में द्वन्द्व, तनाव, घुटन, पीड़ा, अलगाव जैसी, स्थितियाँ पैदा होती है। ममता कालिया की 'अपत्नी', मेहरून्निसा परवेज की 'अपने अपने दायरे', काशीनाथ सिंह की 'कस्बा जंगल' और 'साहब की पत्नी' नारी के ईर्ष्या के भाव को उजागर करने वाली कहानियाँ है। दीप्ति खंडेलवाल की कहानी 'धूप के एहसास' में मधु अपने घर में टाइपिस्ट को पसंद नहीं करती। जिसके कारण पति–पत्नी में झगड़ा भी होता है। पति, पत्नी पर हाथ तक छोड़ देता है। पत्नी का शंकालु व्यवहार उसके दाम्पत्य जीवन को नष्ट कर देता है।[5]

साठोत्तर कहानियों में विधवा स्त्रियों पर भी अपनी लेखनी चलाई है। पति की मृत्यु के पश्चात् विधवा स्त्रियों को दो प्रकार के संघर्ष से जूझना पड़ता है एक तो पारिवारिक और दूसरा आर्थिक संघर्ष से जूझना पड़ता है। विधवा स्त्रियां पहले की तरह विलाप करती नहीं दिखती। इस अवस्था में स्त्रियां कई प्रकार से समस्याओं का सामना करती है जैसे पुर्नविवाह कर लेती है। या परिवार की जिम्मेदारियां पूरी करते करते ही अपना पूरा जीवन बिता देती है। कभी पति के साथ बिताए समय को अपनी स्मृतियों में सजोए रखती है और उसी के सहारे जीवन बिता देती है। या अधिक दबंगई के साथ समाज का सामना

करते हुए जीवन बिता देती है। या अन्य सामाजिक कार्यों में अपना जीवन लगा देती है।

गिरिराज किशोर की कहानी 'रिश्ता' में मनकी शरीरिक संबंधों से कोई परहेज नहीं करती। उसके साथ उसका बेटा रहता है। वह अपने बेटे को लेकर अधिक सजग रहती है क्योंकि वह अपने बेटे की नौकरी लगवाना चाहती है। स्वयं भी नौकरी करती है। उसे एक से अधिक पुरूषों के साथ संबंध रखने में कोई संकोच नहीं है। जो भी अधिक पैसा देता है वह उसी की हो जाती है। बेटा यह सब कुछ पसंद नहीं करता। मां को यह सब करने से मना भी करता है। किन्तु मनकी ये सब कब का पीछे छोड़ चुकी है।[6]

जब नारी के बारे में चर्चा चल रही हो, तो मातृत्व बिना नारी की पहचान अधूरी सी लगती है। साठोत्तरी कहानियों में नारी को वात्सल्यमय रूप के साथ उसकी मजबूरी एवं उपेक्षित माता के रूप में चित्रित किया है। जब नारी की रूचि वासनाओं की और अधिक होने लगती है तो ममता का अभाव दिखाई देता है। लेकिन फिर भी स्त्री कितनी ही आधुनिक हो जाए विवाह के बाद वह मां बनने का सुख पाना चाहती है। नारी में मातृत्व की भावना ईश्वर की देन है। किन्तु आधुनिकता, वैज्ञानिकता के कारण पुरूष पिता बनने को तैयार नहीं है जिसे मृदुला गर्ग की 'मेरा' कहानी में बहुत ही पारदर्शिता से दिखाया गया है। कहानी में महेन्द्र अपने अजन्मे बच्चे को नष्ट करवाना चाहता है किन्तु उसकी पत्नी मीना बच्चे को जन्म देना चाहती है। अधिक कमाने की चाह में वह अमेरिका जाना चाहता है इसलिए वह कहता है 'इतनी जल्दी बच्चा हो गया तो मेरे हाथ–पांव बँध जाएगें मैं कुछ नहीं कर सकूंगा अगर यही बच्चा अब न होकर पांच साल बाद होगा तो सब कुछ होगा। हमारे पास बड़ा घर, गाड़ी फ्रिज, सब ..... मीना मैं नहीं चाहता मेरा बेटा मेरी तरह गरीबी और अभाव में पले। मेरी मानों मीना एबॉर्शन करा लो''[7] किन्तु मीना बच्चे को जन्म देना चाहती है।

वैसे तो नारी के विभिन्न रूप है। जिसे बहन, भाभी, बुआ, देवरानी, जेठानी आदि लेकिन एकल परिवार के बढते चलन के कारण संयुक्त परिवार के रिश्ते कलम या तसवीरें तक ही सीमित रह गए है। साठोत्तरी कहानियों में एकल परिवार की नारी को अधिक व्यापक रूप से चित्रित किया है इन कहानीकारों की दृष्टि महानगरीय जीवन बिता रहे परिवारों पर ज्यादा केन्द्रित रही है।[8] इसलिए नारी के अन्य रूप लगभग अनछुए से रह गए है।

साठोत्तरी कहानियों में स्त्री शिक्षित तो हुई किन्तु परिवार में वह अब भी अपनी पहचान के लिए संघर्ष कर रही है। आर्थिक रूप से मजबूत होने पर उसमें आत्मबल का संचार होता दिखाई देता है किन्तु संस्कारों के बोझ से वह अपने आप को मुक्त नहीं कर पा रही है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. मृदुला गर्ग–चक्करघिन्नी सारिका–पृ. 33
2. राजी सेठी– अपने दायरे, कहानी संग्रह – तीसरी हथेली पृ. 54
3. मन्नू भंडारी – एक कमज़ोर लड़की की कहानी
4. मंमता कालियाः 'सीट नंबर छः' – पीली लड़की कहानी पृ. 84
5. दीप्ति खंडेलवाल – 'धूप के एहसास, पृ. 10
6. गिरिराज किशोर' – रिश्ता' पृ. 15
7. मृदुला गर्ग– 'देखो डैफोडिल जल रहे हैं'
8. साठोत्तरी कहानी और परिवर्तित मूल्यः – डॉ. श्रीमति प्रेम सिंह